घोष के आधार पर -

1. अघोष वर्ण- वर्गों के प्रथम तथा द्वितीय वर्ण- क,ख, च,छ, ट,ठ, त,थ, प,फ हैं ।

2. घोष वर्ण - वर्गों के तीसरे तथा चौथे वर्ण - ग,घ, ज,झ, ड,ढ, द,ध, ब,भ हैं ।

नोट- बुन्देली में एक स का प्रयोग अधिक होता है । बोली में "श" भी कहीं कहीं प्रयोग होता है परन्तु "ण" का प्रयोग नहीं होता । इसकी जगह "न" का प्रयोग होता है । पुरानी भाषा में "ख" के स्थान पर ष भी बोला जाता था परन्तु आधुनिक रूप में इसका प्रयोग नगण्य है ।

अक्षर:-

स्वर अथवा स्वर की सहायता से उच्चारण होता है । अक्षर है ।

शब्द:-

स्वर तथा स्वर व्यंजनों की सहायता से बनने वाले एक अक्षर से लेकर 4-5 या अधिक अक्षरों तक के शब्दों का निर्माण होता है । शब्द संगठन में उपसर्ग और प्रत्यय का योग होने से विभिन्न प्रकार के शब्दों की सृष्टि होती है ।

बुन्देली में क्रियाओं के रूप :-

हिन्दी खड़ी बोली में जो भी धातुएँ है वे अपनी मूल भाषा संस्कृत से उत्पन्न हुई है । यह हिन्दी की क्रियायें ही निश्चित प्रत्ययों के संयोग से बुन्देली के रूप में निर्मित हो गयी है । अतः कहा जा सकता है कि बुन्देली की क्रियाओं का उद्गम मूल परिवार संस्कृत ही है । इस कथन को निम्नांकित [illegible] उदाहरणों से पर्याप्त रूप से सिद्ध किया जा सकता है -

मूल धातु संस्कृत में	क्रिया हिन्दी में	क्रिया बुन्देली में
1. पठ्	पढ़ना	पढ + बौ = पढ़बौ
2. लिख्	लिखना	लिख+ बौ = लिखबौ
3. हस्	हँसना	हँस+बौ = हँसबौ
4. वद्	बोलना	बोल + बौ = बोलबौ

5. कृ करना कर + बौ = करबौ

उपरोक्त उद्धरणों में बुन्देली की क्रियाओं की यह प्रकृति दृष्टव्य है कि वे हिन्दी परिवार की हैं तथा अपने मूल रूप संस्कृत की उन पर छाप है । हिन्दी खड़ी बोली में क्रिया के अंत में "ना" प्रत्यय होता है जब कि बुन्देली में यह "ना" प्रत्यय "बौ" में परिवर्तित हो जाता है यथा – खेलना से खेलबौ, चलना से चलबौ, मरना से मरबौ, जीना से जीबौ, हंसना से हंसबौ इत्यादि । इस "बौ" प्रत्यय के अतिरिक्त कालानुसार भाव बोधक अनेक प्रत्यय हैं जिनसे बुन्देली क्रियाओं के अनेक रूपों की सृष्टि होती है । उदाहरणार्थ "अन्" प्रत्यय से बुन्देली क्रिया का रूप देखिये :-

खेलना से खेलन्, देखना से देखन, लिखना से लिखन्, सीखना से सीखन्, पढ़ना से पढ़न्, चलना से चलन, ।

"नै" प्रत्यय से युक्त क्रियाओं के रूप :- खेलनै, देखनै, लिखनै, सीखनै, चलनै, पढ़नै, आदि आसन्न भविष्य बोधक रूप हैं ।

"बे" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- खेलबे, देखबे, लिखबे, सीखबे, पढ़बे, चलबे, इत्यादि ।

"अत्" प्रत्यय से युक्त बुन्देली क्रियायें :- खेलत, देखत, लिखत, सीखत, पढ़त, चलत, इत्यादि ।

"वी" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :-
========================= जनपद में कहीं कहीं पर "बौ" के स्थान पर "वी" प्रत्यय का भी प्रयोग होता है । यथा – पढ़वी, करबी, करावी, खेलवी, देखवी, लिखावी, पढ़ावी, चलवी, इत्यादि । यह भी आसन्न भविष्य बोधक है । "वी" प्रत्यय से "बौ" के समान ही अर्थ रहता है ।

"ती" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :-
========================= खाती, पीती, रोती, सोती, चलती, लिखती, दौरती, इत्यादि है । यह अनिश्चित [संदिग्ध] वर्तमान "अत्" प्रत्यय के रूपों की भाँति है ।

"ऐं" प्रत्यय युक्त क्रियायें :-
========================= भविष्य काल या संदिग्ध भविष्य बोधक क्रियायें "ऐ" प्रत्यय के संयोग से पूरी होती है । यथा - लैं, दैं, लिखैं, पढ़ैं, चलैं, पियैं, तथा "ऐ" एक वचन में प्रत्यय होता है - लै, दै, लिखै, पढ़ै, चलै, पियै, इत्यादि।

"आउत" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :-
============================ सिखाउत, पढ़ाउत, चलाउत, मिला-उत, इत्यादि ।

"आँय" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- पढ़ाँय, सिखाँय, मिलाँय, दिखाँय, बुलाँय इत्यादि ।

"इयौ" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- पढ़ियौ, लिखियौ, चलियौ, मिलियौ, तकियौ, पढ़ाइयौ इत्यादि ।

" आवैं" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- पढ़ावैं, सिखावैं, चलावैं, दिखावैं, बतावैं इत्यादि ।

" आवनैं" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- पढ़वावनैं, सिखवावनैं, बुलवावनैं, चलवावनैं इत्यादि ।

"वावै" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- पढ़वावै, लगवावै, बतावैं, सिखवावै, बुलवावै, इत्यादि ।

"आतौ" प्रत्यय से युक्त क्रियायें - पढ़ातौ, सिखातौ, मिलातौ, बुलातौ, चलातौ, इत्यादि ।

"इयत" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- पढ़ाइयत, सिखाइयत, बुलाइयत, चला-इयत, मिलाइयत इत्यादि ।

"है" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- पढ़िहै, लिखिहै, पढ़ाहै, सिखाहै, आहै, जैहै, रैहै, बनाहै, लिखिहै आदि ।

"आय" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- पढ़ाय, सिखाय, आय, जाय, मिलाय, जुराय इत्यादि ।

"वाय" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- मिलवाय, पढ़वाय, सिखवाय, करवाय, दिखवाय, इत्यादि ।

"हौ प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- मिलाहौ, दिखाहौ, करवाहौ, फिरवाहौ, करहौ, मिलहौ, चलहौ इत्यादि ।

=-=

"वाय" प्रत्यय से युक्त क्रियायें - मिलवाय, धुलवाय, कटवाय, लिखवाय, पढ़वाय, इत्यादि ।

"ईं" प्रत्यय से युक्त क्रियायें - वैसे यह प्रत्यय "ईं" का रूप है परन्तु अल्प परिवर्तन से पृथक प्रत्यय बन गया । यथा लिख ईं, लिखाईं, पढ़ ईं, पढ़वाईं, मार ईं, मरवाईं आदि ।

"यें" प्रत्यय से युक्त क्रियायें :- लिख यें, पढ़ यें, पढ़वायें, लिखायें, बतायें, सिकायें, चलायें, चलवायें आदि ।

"ती" प्रत्यय युक्त क्रियायें - पढ़ाउती, लिखाउती, धुलाउती, धुलवाउती, दिखाउती, दिखवाउती, [इनमें भूतकाल का बोध होता है]

"इये" प्रत्यय से युक्त क्रियायें - मिलाइये, बताइये, सुनाइये, कहिये आदि।

उपरोक्त विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बुन्देली भाषा की क्रियायें प्रत्ययों के संयोग से अनेक रूप धारण करती है । उदाहरणार्थ - पढ़बौ क्रिया के रूपों को देखिये -

वर्तमान रूप कर्तृवाच्य	प्रयोग	रूप कर्मवाच्य	प्रयोग
1. लिखबौ	मोय लिखबौ साँचो लगत,	लिखाबौ	मोय लिखाबौ साँचो लगत
2. लिखत	मै लिखत	लिखाउत	हम चिट्ठी लिखाउत
3. लिखाउत	मै लिखाउत	लिखवाउत	तुम लिखवाउत
4. लिखन	उनकी लिखन नौनी है।	लिखावन	मोय/हमें लिखावन चाने
5. लिखाइयत	सावें लिखाइयत	लिखवाइयत	चलौ लिखवाइयत
6. लिखियत	साजो लिखियत	लिखवाइयत	चलौ लिखवाइयत
7. लिखौ	चिठिया लिखौ	लिखवाय	चिठिया लिखवाय
8. लिखै	वौ लिखै	लिखवायबौ	चिठिया लिखवाय
9. लिखैं	वे लिखैं	लिखवायें	वे लिखवायें
10. लिखिये	तैं लिखिये	लिखवाइये	तैं लिखवाइये
11. लिखियो	तुम लिखियो	लिखवाइयो	तुम लिखवाइयो

-=-

अकर्मकवाच्य	प्रयोग	सकर्मवाच्य	प्रयोग
लिखाइयौ	चिठिया लिखाइयौ	लिखवाइयौ	चिठिया लिखवाइयौ
14. लिखबी	अन लिखबी	लिखवावी	अन लिखवावी
15. लिखिहै	वौ लिखिहै	लिखवाहै	मास्टर लिखवाहै
16. लिखिहैं	वे लिखिहैं	लिखवाहैं	मुंशी लिखवाहैं
17. लिखबैं	हम लिखबैं	लिखवाबैं	हम लिखवाबैं
18. लिखिहौ	लरका लिखिहौ	लिखवायगौ	लरका लिखवायगौ
19. लिखैगी	चिठिया लिखैगी	लिखवायगी	चिठिया लिखवायगी
20. लिखाउत	अबई लिखाउत	लिखवाउत	आज लिखवाउत
21. लिखारये	आज लिखारये	लिखवारये	आज लिखवारये
22. लिखियौ	तुम लिखियौ	लिखवइयौ	तुम लिखवाइयौ

भविष्य काल बोधक क्रियाओं में गौं, गे, है, आय, आहे, आउत, आवने, बी, हुं, हैं, आदि प्रत्ययों का संयोग होता है । उक्त तीनों कालों में संदिग्ध वर्तमान, भूत तथा भविष्य के बोधक रूप भी हैं । आसन्न भूत, वर्तमान भविष्य आदि के रूपों का भी वर्णन किया जा चुका है ।

कभी कभी उक्त क्रियाओं के रूप सहायक बन जाते हैं तथा वाक्य में मुख्य क्रिया और बन जाती है यथा-

मैं कैसे जात- यहाँ जात क्रिया के बिना कैसे अकर्मक क्रिया रह जायगी तथा अर्थ पूर्ति जात के बिना नहीं होगी ।

विशेष- संदिग्ध भूत काल या वर्तमान के कुछ प्रयोग देखिये -

लुगाई आई हुये । संदिग्ध भूत

लुगाई आ रई हुइये । संदिग्ध वर्तमान

लुगाई आय संदिग्ध भविष्य

इसी प्रकार -

पानी आन चाउत लरका खेलत है ।

और गिरन चाउत परत होत है ।

मास्टर अबई पढ़ाउत

बाई किसा सुनाउत आदि वाक्य भी संदिग्ध अवस्था बोधक हैं ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

बुन्देली में कुछ एकाक्षर या दय अक्षर वाली क्रियायें भी होती हैं। परन्तु उनका अर्थ बिना प्रत्ययों के योग के आदेश या प्रेरणा परक ही रहता है। सामान्य अर्थ प्रत्ययों के संयोग से ही पूरा होता है। यथा -

चु, पी, आ, ना, धी, खा आदि एकाक्षर क्रियायें हैं। जो प्रत्यय बिना प्रेरणार्थक या आदेश परक भाव व्यक्त कर रही है -

मत चु, पाय पी, झी आ, जा आदि।

प्रत्यय युक्त करने पर -

चुवी, पीबी, आबे, नाबी, धिबे, खाबे, आओ, आदि रूप बन जाती हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक क्रियायें :-
==========================

अकर्मक क्रियायें :-
===========

इन क्रियाओं में कर्म कारक नहीं होता है जैसे - सोबी, चलबी, निकबी, उठबी, बैठबी, आदि

सकर्मक क्रियायें :-
============

जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़े वह सकर्मक क्रिया होती है। जैसे खाबी, पीबी, देखबी, करबी इत्यादि। डा० कृष्ण लाल हंस ने पूर्ण अकर्मक और पूर्ण सकर्मक तथा अपूर्ण सकर्मक दो दो भेद किये हैं।

[बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप पृष्ठ 242]

सहायक क्रियायें :-
=============

बुन्देली में सहायक क्रियाओं का बड़ा महत्व है इनके बिना मुख्य क्रिया पंगु हो जाती है और अर्थ बोध की क्षमता नहीं रहती। सहायक क्रियाये पूरक क्रियायें बन जाती है तभी मुख्य क्रिया पंगु का अर्थ बोध होता है। यथा - ऊ जात है, वो खा रओ, मैं लिख रओ आदि वाक्यों में सहायक क्रियायें रओ हों, रओ, है, हतो आदि है।

बिना प्रत्ययों के योग के किसी भी क्रिया का मूल रूप अर्थ बोध नहीं कराता। श्री लक्ष्मी प्र. पी गुप्त ने "बुन्देलखंडी भाषा" बुनियादी शब्द भंडार और व्याकरण [एक मोटी रूप रेखा] ग्रंथ में 25 प्रत्ययों का उल्लेख किया है परन्तु इनकी संख्या मेरे मत से पूर्ण

इस प्रकार उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष के कर्ता और उनके सम्बन्धों के रूप बनते हैं ।

कारक :-

बुन्देली में भी हिन्दी की भाँति कारक होते है । इनके चिन्हों में भी पर्याप्त साम्य है । बोली के अनुसार भाषा में सूक्ष्म अंतर है । कुछ भाषागत अंतर भी है । यथा -

कारक	चिन्ह	उदाहरण
कर्ता	ने	मैंने, राम ने, उने, तेंने आदि
कर्म	को, खों, कां	मोकों, मोखों, तोखां, उखां,
करण	सें, सो	मोसें, तोसों, वासें, उसें,
सम्प्रदान	कों, खों, लाने, लानें, कायें,	मोय लाने, उखां, मोखें, तोखां उने-लानें, उसे आदि ।
अपादान	सें, सों, से, सें,	उसें, मोसें, तोसें, उनसें, उओसें, इओसें, आदि ।
सम्बन्ध	वाय, री, कौं, को, की, रा, री, रे, ना, नी, ने	हमाय, तुमाय, उनको, हमारी, तोरी, हमना, तुमना, उन्ना, हमरे, तुमरे आदि ।
अधिकरण	में, पे,	मोपे, उनो, उनों, तुमपे, घर पे, घर पे, घर में, पानी में, आदि
सम्बोधन	ये, रे, अरे, ओ, अहो, हा, अरी ।ओफ्फो	ओफ्फो । मर गओ ! ये । जी का हो गओ ! अरे । भगवा, हा । राम । तुमई हो ।

वचन:- बुन्देली में एक वचन तथा बहु वचन केवल दो वचन होते हैं जैसे-

एक वचन	बहु वचन
लरका	लरकन, भौत लरका, कुलक लरका, पिनातलरका
पौधा	पौधों, पौधिन, पौधिनन
केला	भौत केला, कुलक केला, केलन

=-=

[3] निश्चय वाचक सर्वनाम :- यह सर्वनाम संकेत वाचक विशेषण बन
============================ जाता है । सर्वनाम के प्रयोग पर यह
निर्भर करता है । जौ, वौ, जे, वे, जा, वा, ई, ऊ, इनन, उनन
ऐसौ, वैसौ, जैसौ, ऐसे, वैसे, ईखाँ, ऊखाँ, ऊखौं, ईखाँ, ईखौं, जिन,
जिन्ने, इन्ने, उन्ने, वाने, जाने, ईने, ऊने, जिनखाँ, जिनखौं, जिनखाँ,
उनखाँ, उनखौं, उनखौं, कुछ, सबक, सबरे, अमुक, सबरी, हरेक, जनगद
आदि ।

[4] अनिश्चय वाचक सर्वनाम :- कोउ, कछु, कच्छु, कछुवई, हर, कुछ,
============================ सब, कुछ, सबरे, सबक, कुच्छ, कौनउ
केउने, काउने, कोउखाँ, काउखौं, केउखौं, काउखाँ, काउखौं, काउखौं,
कई, कोई, काये, तमाम, बहु, किसऊ आदि केउनन, कोउआई आदि ।
"न" के साथ प्रयोग करने पर - काउन, कोउ, कछु, न कछु, केउने, न
केउने, आदि होते है ।
पुनरुक्ति प्रयोग में - कोउ-कोउ, कछु-कछु, आदि होते है ।
[2] संयुक्त सर्वनाम - यह दो या अधिक शब्दों से होते हैं ।
[5] सम्बन्ध वाचक सर्वनाम :-
============================ जौ, सो, जैसो, जितनो, जौन, सौन,
जे, ऊ, से वे, जौनसौ, जिते, जितनौ, जिने, जिन, जौकोउ, हरकोउ,
और कोउ, कोउ और, जो कछु, और कछु आदि हैं ।
[6] प्रश्न वाचक सर्वनाम :-
============================ बुन्देली में "का? तथा को" प्रश्नवाचक
सर्वनाम प्रमुख हैं । इनके अतिरिक्त कैसौ, कैसो, कितनो, कितनौ,
कौन, कौनसौ, कोको, काय को, काय खाँ, काय लें, कोखौं, कौना,
किनेक, कौनौं, किन्ने, को, कितनी, किन, किन खाँ, किन खौं, किन
के, किसे, कैसें, का-का, कैसो-कैसो, कौन-कौन, को को, को को, का का,
काय काय, कौन कौन, कितनो, कितनो, आदि पुनरुक्ति परक प्रश्न-
वाचक सर्वनाम भी हैं ।

----

[3] परिमाण वाची :-

न्यूनाधिक परिमाण का बोध कराते हैं - यथा - थोरी, भौत, तनक, जौपाक, कुल्ल, उत्तो, इत्तो, पतीक[9], कुल्ल, सौतक, छटाक इत्यादि ।

[4] संकेत वाचक :-

वा, जा, जो, वी, वे, उन, कोउ, कछू, कौनऊ, जे, का, जौ, वेउ, वेऊ, कोई आदि ।

[5] व्यक्ति वाचक :-

टोपी वाय, छपरा वाय, रमपुरया, झाँसी वाई, गाँव वाय इत्यादि ।

कैसे व्याकरणकारों ने विशेषणों के चार प्रकार बताये हैं । उनमें व्यक्ति वाचक विशेषण नहीं हैं । डा० कृष्ण लाल हंस ने भी अपने ग्रंथ "बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप" में पृष्ठ 227 पर यह स्वीकार किया है ।

इसी विद्वान डा० [illegible] मिश्र" ने सम्बन्ध वाचक विशेषण अपने ग्रंथ हिन्दी व्याकरण में पृष्ठ 97 पर प्रस्तुत किया है । जो पूर्णतः युक्ति संगत है । बुन्देली में विशेषणों की संख्या हिन्दी से अधिक है ।

यह विशेषण प्रायः संज्ञा, क्रिया विशेषण, या क्रिया से बनते हैं । जैसे- दुखी, सुखी, हठी, आरी, भीतरी, पढ़ी, कटी, बटी आदि । इसी प्रकार से बुन्देली, पहाड़ी, रेशमी, काबुली, लड़ाकू आदमी आदि क्रमशः देश जाति स्थान पदार्थ, विज्ञान, तकनीक, तथा वस्तु का व्यक्ति का प्रयोजन बोधक हैं । अतः यह विशेषणों के अतिरिक्त भेद हैं ।

विशेष :- 1- परिमाण वाचक विशेषणों में अनिश्चित परिमाण वाचक तथा निश्चित परिमाण वाचक विशेषण दो भेद किये जा सकते हैं । जैसे- भौत, जरा, थोरी, कम आदि अनिश्चित परिमाण बोधक तथा छटाक भर, मन भर, फुट भर, बीघा भर आदि निश्चित परिमाण बोधक विशेषण है ।

---

9. पतीक = पतो भर = अँगुरी भर

"अ" अकारन, अनुआँ, अनखा, अनूठो आदि ।

"आ" आ वर्षा, आ औदर, आदि

"अन" अनजान, अनगढ़, अनदाय, अनदेखी आदि

"निः/निर" निशादिन, निरोग, नियम्मियाँ, निगुती आदि

"बे" बेढंगी, बेलिन, बेअकल्, बेलाग आदि

"ला" लाजवाब, लाइलाज, लावारस, लापरवाह आदि

"स" ससुर, सनीचर, सापरवाति, सदैव आदि

"अद" अदमरी, अदबरी, अदसींजी, अदपकी आदि

"गैर" गैर बिरादरी, गैर आदमी आदि

"ना" नासमझ, नाचीज, नाकुछ, नाजुक आदि

7/07 "वि" वियोगी, बिछुड़ी, विरासतन्, बिकल आदि

"सै" सैयान्, सैकड़, सैंति, सैराट आदि ।

इस प्रकार पूर्व प्रत्यय [उपसर्ग] भी सीमाबद्ध नहीं है गिने जा सकते । बुन्देली में अन्य भाषाओं के उपसर्ग व प्रत्यय मिलकर बुन्देली करण हो जाने से वे बुन्देली के ही माने गये है । जैसे संस्कृत का शील बुन्देली करण होने से सील हो गया । इसी प्रकार फारसी के बंद, दार, नाक आदि प्रत्ययों से बुन्देली के विशेषण शब्द बन गये हैं । जिनका उल्लेख किया जा चुका है ।

क्रिया विशेषण :-

क्रिया की विशेषता अथवा विशेषण की विशेषता अथवा दूसरे क्रिया विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं ।

यथा - अबै, अबई, आय, भीत, रैन, खूब, बड़ो आदि ।

प्रयोग क्रमशः वो अबै आय ।
वो अबई आओ तो ।
वो आय आय
आज भीत लगी है ।
नरका रैन जुता धरो ।

परन्तु क्रिया विशेषणों को भी सर्वथा पद नहीं किया जा सकता है ।
जैसे कुछ नवीन रूप देखिये -

[1] पुनरुक्ति परक क्रिया विशेषण - कऊं कऊं, मनछत, मनछत, कमऊं कमऊं हर हर बेरां आदि ।

[2] युग्म शब्दीय क्रिया विशेषण - जैसें तैसें, आगे पाछें, हूंटी तांती, चौरी चौरा, आल काल इत्यादि ।

[3] शर्त बोधक क्रिया विशेषण :- अगर, तौ, कर्मत, स्यात, जौ पै, जैं, सौ इत्यादि पृथक भेद हैं ।

बुन्देली व्याकरण शोधार्थी इन्हें और भी अनेक रूपों में शोध कर सकते हैं ।

डा0 श्याम सुन्दर बादल ने अपने ग्रंथ " बुन्देली का भाषा साहित्य " में पृष्ठ क्रमांक 430 पर समुच्य बोधक तथा विस्मयादि बोधक क्रिया विशेषण भी बताये हैं । जिनके उदाहरण क्रमशः औ,के,या, पै, तथा वाभा, धन्य है, राम राम, हिया रे, औ लल्ला, बाप रे बाप, औ मताई आदि हैं । यह क्रिया विशेषण विकारी तथा कुछ रूप अविकारी होते है । विभिन्न शब्दांशों के योग से संज्ञा तथा विशेषणों के योग से भी बनते हैं ।

बुन्देली के अन्य क्रिया विशेषण जैसे - आउत, जात, जातन, जातन, बैठत, होतेई, बढ़ेईं, खाबें, आदि होते है इनका प्रयोग कालानुसार पुरुषानुसार होता है ।

काल :-
======

बुन्देली में वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमान काल तथा आसन्न वर्तमान काल तथा पूर्ण या निश्चित वर्तमान काल होते हैं ।

1. वर्तमान काल :- यह सामान्य वर्तमान काल भी कहा जा सकता है जैसे जात, आउत, बैठत आदि ।

2. संदिग्ध वर्तमान काल :- जात हुये, आउत हुये आदि ।

3. आसन्न वर्तमान काल :- इस काल में क्रिया विशेषणों का प्रयोग होता है जैसे - वो आं जात, पानी बरसन चाउत, हम पढ़त हैं आदि ।

=-

4. निश्चित या पूर्ण वर्तमान काल – खा रये, पढ़ रये, आ रये आ।

[2] भूत काल :– 1. सामान्य भूत – गयो, आये, लेो, आदि ।

2. पूर्ण भूत – गये ते, आये ते, लेो ते आदि ।

3. अपूर्ण भूत– आ रये ते, लेन रये ते आदि ।

4. संदिग्ध भूत– आये हुइँ, लेो हुइँ आदि ।

5. निकट या आसन्न भूत– आ गये, लेन लओ, खाणओ आदि ।

6. संभाव्य भूत– आउतो, लेनतो आदि ।

डा० कृष्ण लाल हंस ने बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप" में पृष्ठ 250 पर " हेतु हेतु मद्भूत काल का भी उल्लेख किया है । उदाहरण– आतो, आती आदि है ।

[3] भविष्य काल :– 1. सामान्य भविष्य – इसमें प्रत्यय हैं, है, हो, हौं, आदि प्रत्यय लगते हैं । यथा– खाहै, आहै आदि ।

2. संभाव्य भविष्य – इसमें प्रत्यय ऐ, ए, का प्रयोग धातु में होता है– यथा– देवे, देवे, गिरे, चले आदि ।

नोट– संयुक्त रूप से ऐ, में, आय, के, हैं, है आदि प्रत्ययों के योग से क्रिया भविष्य काल का बोध कराती है जिसका उल्लेख क्रिया प्रकरण में किया जा चुका है ।

वाक्य

बुन्देली में भी अन्य भाषाओं की तरह वाक्य होते हैं । सामान्यतः कर्ता क्रिया कर्म आदि से युक्त संरचना वाक्य है । अपने मनोगत भावों का प्रत्यक्षीकरण वाक्यों द्वारा ही सम्भव होता है । वाक्य रचना शब्दों से और शब्द रचना वर्णों से होती है । बुन्देली में निम्न लिखित प्रकार के वाक्य होते हैं –

1. साधारण वाक्य :– जो कर्ता तथा क्रिया से युक्त होते हैं । साधारण वाक्य कहलाते हैं यथा – राम घरै आवो ।

2. संयुक्त वाक्य – दो या दो से अधिक वाक्य एक साथ जुड़े होते हैं

जैसे - बछया में कुसती लरी और जीत गयी । "और" संयोजक से जुड़ा है । जो बगिया गओ तो फिर जाने उतई से गओ के किवाड़ अंत चली गओ के वा करजो ।" यह अधिक वाक्यों से युक्त संयुक्त वाक्य है । इसमें "फिर" "के" आदि संयोजक शब्दों का प्रयोग है ।

यह वाक्य संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया विशेषण प्रधान भी हो सकते हैं और जो, कि, जौ, तब, ऊँ, औं, जौनें, कैसी, जैसी, सो, आदि संयोजकों से युक्त होते है । डा० कृष्ण लाल हंस ने संयुक्त वाक्य को संज्ञा उपवाक्य विशेषण उपवाक्य तथा क्रिया विशेषण उपवाक्य 3 भागों में विभाजित किया है । "बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप] पृष्ठ 183/184]

पाश्चात्य विद्वान डा० वाल्सन बीम सिलस" ने अपने ग्रंथ हिन्दी व्याकरण में निम्न लिखित प्रकार के वाक्य माने हैं :-

1. विधानार्थक वाक्य ।
2. प्रश्नार्थक वाक्य ।
3. प्रेरणार्थक वाक्य ।
4. स्वीकारात्मक वाक्य ।
5. नकारात्मक वाक्य ।

बुन्देली भाषा में वाक्यों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है ।

1. साधारण वाक्य = हमें डिबिया चाही ।
2. प्रश्न वाचक वाक्य - का, काय, किते, कायँ, किताँ, कौ, की की, काय खाँ, कैं, कितनी, कितनों आदि । प्रश्न वाची शब्दों से प्रश्न वाचक वाक्य बनते हैं । यथा -

ई कुआ में कितनी पानी है ?
वो कैं झाँसी जाहै ?
लरका कों आय गओ ?
का भैंस ब्याय गई ? आदि ।

-=-

3. नकारात्मक वाक्य :- तुम घरे ना जाओ । अब ना करो महाराज । आदि वाक्यों में नहीं का बोध होता है । नहीं न, ना, नु, मत आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है । यथा - हमे नु चाहें, अर्थ - हमें नहीं चाहने आदि ।

4. प्रेरणार्थक वाक्य :- 1. चलो बैठो पढ़ो ।

2. आ जाय खेलो ।

3. हुक्का अलमाई में धर दो आदि ।

इन वाक्यों में सलाह या आदेश होता है ।

5. स्वीकारात्मक वाक्य - इन वाक्यों की क्रिया का गुण युक्त । स्वीकारात्मक भाव का होता है । यथा - तुम घरे आव। हम किताब पढ़ूंगी। । हाँ हम सब करीं आदि ।

6. संयुक्त वाक्य - यह दो या दो से अधिक वाक्यों का संगठित रूप है - यथा - मोड़ा हाट से आयो और फिर अबई चलो गओ । "और" आदि संयोजकों से जुड़ा रहता है ।

7. एकाक्षर वाक्य :- "आ" "जो" लो, खा, पी, मैं, है, ना, गा, इत्यादि । ऐसे वाक्य सम्पूर्ण अर्थ दे देते हैं और कर्ता क्रिया उद्देश्य विधेय कर्म आदि लुप्त रहते हैं । यह वाक्य आज्ञा सूचक होते हैं प्रश्नवाचक भी होते हैं ।

8. द्वयक्षर वाक्य :- चलो, उठो, पढ़ो, सुनो, लिखो, करों, जाओ, धूमों आदि भाव विशिष्ट बोधक हैं ।

9- विस्मय सूचक :- ऐसे वाक्यों में विस्मय बोधक शब्दों का प्रयोग आदि या अंत में होता है यथा -

1. बुरी भओ । राम । राम ।।

2. ओफ्फो । गजब हो गओ, अरे अरेरे, आदि विस्मय सूचक शब्दों से युक्त रहते हैं ।

10. अपूर्ण वाक्य :- यथा- अंधरो मांत, पढ़ारो लरका, नाज कनुआ आदि । ऐसे वाक्यों में पूरक शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है । भावानुसार प्रसंगानुसार भाव बोध तो हो जाता है परन्तु पूरक कर्ता क्रिया

-=-

आदि जोड़ने से पूर्णता आती है ।

11. पूर्ण वाक्य :- उद्देश्य और विधेय युक्त वाक्य होते हैं यथा - मै किताब पढ़ रओ ।

लिंग : बुन्देली में दो ही लिंग होते है 1-पुल्लिंग, 2- स्त्री लिंग

1- पुल्लिंग :- नर जातीय प्राणियों, पदार्थों, भाव वाचक संज्ञाओं स्थानों आदि का बोध पुल्लिंग शब्दों से होता है । यथा - लरका, मोड़ा, घोड़ा, लोटा, पानी, तेल, हीरा, घंटा, महीना आदि ।

2. स्त्री लिंग :- स्त्री जातीय प्राणियों, पदार्थों, स्थानों, वस्तुओं, संज्ञाओं आदि का बोध कराने वाले शब्द होते हैं - यथा - चिरिया, मोड़ी, घुरिया, चाँदी, लराई, मिठाई, सिलाई आदि। नी, ई, याँ, ई, या आदि अनेक प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग वाचक शब्द बनाते हैं । बुन्देली में नपुंसक लिंग नहीं 8 माना गया है । स्वयं हिजड़ा तथा नपुंसक शब्द पुरुष जातीय भाव बोधक हैं ।

समास :- हिन्दी की भाँति बुन्देली में भी समास होते है । डा0 कृष्ण लाल हंस ने द्वंद, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, अव्ययी भाव तथा बहुव्रीहि आदि 6 समासों को माना है [1], जब कि लक्ष्मी चंद गुप्त ने अव्ययी भाव समास को छोड़कर शेष 5 समास माने हैं [2] बुन्देली में निम्न 6 प्रकार के ही समास मिलते है ।

1. अव्ययी भाव समास :- पहला पद अव्यय होता है - यथा हरकोर, भरसक, रोजीनामा आदि ।

2. बहुव्रीहि समास :- दो पदों से मिलकर अन्य अर्थ निकले यथा - कनमुच्छा, नौधिरा, कनुवा आदि ।

अर्थ- कनमुच्छा- जिसकी कानों तक मूँछें है अर्थात अमुक व्यक्ति ।

3. कर्मधारय समास :- पहला पद विशेषण और दूसरा संज्ञा होता है- यथा- कारी मिर्च, कुबटरा, कठिया गेंहू आदि।

---

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप . पृष्ठ 292 से 295, डा0 कृष्ण लाल हंस
2. बुन्देली भाषा - पृष्ठ 97 । लक्ष्मी चंद गुप्त ।

4. तत्पुरुष समास :- इस समास में कारक विशेष का बोध होता है । विभक्तियों का लोप होता है । द्वितीय तत्पुरुष तत्पुरुष की तरह से सप्तमी तक का बोध होता है । यथा - मुक्काबीरा, घी दुकायन, पुराभार, धौकापाव, बहुकुन, काम कराई, तेल पिराई, गौशाला, मस्त मौला, राज दरबार, बैलगाड़ी आदि ।

5. द्वंद्व समास :- दो पदों के बीच "और" शब्द का लोप हो वहाँ द्वंद्व समास होता है । यथा- टिंकू - टिंकू, लैला-मजनू, दाल-रोटिया, चूनी-चकिया, खिचड़ी-चौखा आदि ।

6. द्विगु समास :- पहला पद संख्या वाचक होता है - यथा- तिपाय, तिपाई, चौपिया, बारा दुआई, नौकोर, नौलखा, दुआर्यौ, अठटकिया, चौपाता, सतखड़ी, आदि ।

वाच्य :-
========

बुन्देली में 2 वाच्य हैं । कर्ता वाच्य तथा कर्म वाच्य

1. कर्ता वाच्य- कर्ता प्रधान होते है यथा- मैंने चिरिया मारी, तुमने पखरा मारो आदि ।

2. कर्म वाच्य :- इन वाक्यों में कर्म प्रधान होता है यथा- चिरिया मोंय द्वारा मारी गई । 2. पखरा तुमाये द्वारा मारे गये ।

इनके अतिरिक्त - पखरा तुमने मरवाये, चिरिया मैंने मरवाई, कुआ उन्ने बनवाओ, चिड़िया वाने मरवाई आदि भी कर्म वाच्य के ही रूप में हैं जिनमें कर्म प्रधान तथा कर्ता अप्रत्यक्ष या गौण है । यानि कुआ उन्होंने नहीं बनाया अपितु बनवाया इसका अर्थ अन्य लोग भी कर्ता हो सकते हैं । चिड़िया वाने नहीं मारी अपितु किसी से चिड़िया मरवाई गई है कर्म वाच्य के इन वाक्यों में शुद्ध कर्म वाच्य से आंशिक अंतर है । क्रिया के रूप - करावौ, सिखावौ, पढ़ावौ, सुनावौ आदि का प्रयोग होता है ।

प्रत्यय:- वे शब्दांश है जो शब्दों के पश्चात जोड़े जाते है । इन्हें परसर्ग
=====
भी कहते है नवीन शब्दों की रचना करते है यथा -

कों कौंड़ौची गदा पै नईं चढ़त, ऊँट कौ घुमा ऊँटई लेत, सूदी पाई तितिन्नियाँ, कंगा पाओ तेल, नाऊ नाऊ की बरात ठकुआ कौ ढोर, औरे की परी पचारी, पराय मूँड़ पसेरी सौ, बिना मरें सरग नईं मिलत, पाँवनन लाँघ मराउत, तविलन खेती नईं होत, कुर की बाप कुलवा, पड़ाये की नाव चली फिरत, नाव में पेट दुखाउत, गुर खाय गुलगुलन को परेज करें, और दरै बाँ कुपना नौआ, आगी के लौं अँगारे हो। जी की पाप तो कौ बाप, हमी कौड़ी फिरके आय, मर गई तो पठाई है। तमातई के मरे बाँ को लौ रोउत।, मरतनई ताईं पर गई, हाँत न मुठी कुरकुरा उठी।, चनक न चंडा तुके गुंडा।,, करे धुंमटयाउ पकरी पै लँगुटियाउ, गरीब की पादो दूर लौ बसात, गरीब की लुगाई सबकी भुजाई, घर की कुरड्या में आँख फूटत।, अनुन न जावें सासरे औरन बाँ सिख देय। बाबा परी है ई घर में गोड़े पसारें ऊ घर में, कसाई को डेरा, नैये गाँव में ऊँट बाबाकर के की आना, रात भर पीसो पारे में उठाय, कुँआ में भुंस, सास की पुटिया बऊ के होत, कुतियाँ पाने जान लगी तो हड़ियाँ को घाटो, रेवन कच्चाये की कुतिया आदि। इन कहावतों में कुछ प्रकृति परक कुछ कृषि की, कुछ जातीय कुछ स्थानिक तथा कुछ परम्परागत आदि अनेकों प्रकार की हैं।

बुन्देली पर्याय वाची शब्द :-

पानी- पानु, जल, पनियाँ

बादल- मेघ, बदरा, बदरवा, बदरिया, बादल,

आदमी- मांस, मूँस, मनई, मनुस, मानस आदि

स्त्री - मेहरार, औरत, लुगाई, धनी, धनीमांस आदि।

भगवान- ईश, ईसुर, परमेसुर, भगवान, राम आदि

ग्राम - गाँव, देस, ठौर, गमई, ठिकाना आदि।

बुन्देली में विरोधवाची (विपरीतार्थक) शब्द :-

लोग लुगाई, राजा रानी, आगी पानी, अबा आजी, कक्का काकी, भैया भौजी, डुका डुकिया, भीतर बार, आगें पीछें, अँधियारं उजियार,

1. " रौ रौ बिरह रात की तपना,
   मौन बात हैं अना "

   लोक कवि श्री राम सहाय कारीगर
   " नईं टकार "

2. " शिव के नैन ब्रह्म आकाश राम पुत्र चितलाके ।
   संवत विक्रम शुभ की शरद पूर्णिमा गाके ।"

" अंकानाम वामतो गतिः" नुसार शिव के नैन 3, ब्रह्म 1, आकाश शून्य, राम पुत्र 2, अर्थात 3102 = 2013 विक्रमी संवत का वर्णन ।

लोक कवि श्री राम सहाय कारीगर " मनमोहन ग्रंथ"

लोक साहित्य में ऐसी उक्तियाँ पर्याप्त है । इनका भी साहित्य में अत्यधिक महत्व है ।

बुन्देली काव्य में ध्वन्यानुसारी शब्द :-
==============================

सर सर हवा, भर भर हवा, मोटर घर्र घर्र , गाड़ी घरर मरर, खटका खट्टर पट्टर, बादल दरदरात, धार धरात, घिरात, पानी में गिरने को धड़ाम, फर्श पर गिरने [illegible] पर खट्ट, लकड़ी तोड़ने पर चट्ट या पटट या पर्र, बकरी मिमियात, गाडुर मैं मैं करत, गाय रमात, बैल डिड़कत, बन्दर चिन्नात, भन्नात, गोली सन्न, सन्नात, पानी छलछलात, पेट अआलात। मशीन भरभरात, कुत्ता भौं भौं करत, चौंखे- चिटर चिटर । फटफटिया - फटफटात, नक्कारा घटघटात, मारई भन्नात, घोड़ा पडरम पडरम दौरत, चिरैया चेचियात, बिलैया म्याऊँ म्याऊँ करत, गदा ढैंचू, ढैंचू रैंकत, कपड़ा फटने पर चर्र, अनाज गिरने पर अर्र, बालू या अनाज छानने पर खर्र आदि विविध प्रकार की ध्वनियों के कारण तदानुरूप शब्दों का निर्माण हुआ है जिनका प्रयोग लोक काव्य में होता है ।

बुन्देली लोक काव्य का कला पक्षीय अध्ययन
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

भाषा :- बुन्देली लोक काव्य की भाषा ललित तथा माधुर्य, ओज व प्रसाद गुणों से युक्त है । प्रत्येक कवि की सहज विवेचना में उसके कला पक्षीय

अंग को अछूता नहीं रखा गया । परन्तु समग्र रूप से बुन्देली भाषा का लालित्य ब्रज भाषा की मधुरिमा लिये हुए है । उसमें सरलता प्रवाह रसानुभूति क्षमता, बोधगम्यता आदि गुणों का समावेश है । कहावतों और मुहावरों के स्वाभाविक प्रयोग से उसमें शिल्पगत सौंदर्य की सृष्टि हो गई है । एकाक्षर रचना से लेकर बिना मात्रा की रचनायें, अक्रोष्ठ, गतागत, दो सिंहावलोकन, छेड़छागत, झुमका, छंद, उलटगतागत, दो अंग, चौअंग, अठंग, रचनायें उनका काट छांट, सौन्दर्य, नाद सौंदर्य, नाद सौंदर्य, लय तुक आदि देखी ही बनता है । बुन्देली लोक साहित्य में यथा स्थान इन अपरोक्त विधाओं का उल्लेख सांकेतिक रूप में किया गया है । प्रस्तुत लोक काव्य के शोधग्रंथ में सादा रचनाओं से लेकर अलंकारिक रचनायें कलापक्ष की उक्त विधाओं से युक्त रचनाओं का उल्लेख किया गया है । संक्षेप में लोक काव्य की कला पक्षीय विशेषताओं का विवरण निम्न लिखित है :-

1. एकाक्षर रचनायें :-
================

" ककका कों काकी के काके, के के कका कका के । "[1]

× × ×

" नानी नान नुनों नन्नी ना, नन्नी नान नुनी ना ।"[2]

2. बिना मात्रा वाली की रचना :-
=========================

" दध तर धर धक चलत डगर डर,
अटर धरत डग डट डर "[3]
वैसी पर्याप्त रचनायें हैं ।

3. अक्रोष्ठ :-
============

जैसे -" अगम अगन जननी दे जन को हाना ।
दे जैरर करी छंद जैर तुमें सुनाना ।"

---

1 व 3 स्वरचित

2. लोक कवि श्री राम सहाय कारीगर (नई टकार)

टेक- राजा टेक धनुष की ठाने, सीता जी के लानें ।;[1]

नोट- इसमें - पवर्ग को निकाल दिया गया है । इसी प्रकार से रामायण की सम्पूर्ण कथा रची गई है ।

सिंहावलोकन रचना :-
==================

" नंद लाला ने सखन को, लिया पास बुलाय ।
आये जमुना तीर पै गइयाँ रहे चराय ।।"

टेक- गइयाँ चर रहे नंद लाला, नंद लाला संग ग्वाला ।।[2]

× × × × ×

जिस शब्द पर चरण की इति उसी शब्द से नये पद का प्रारंभ सिंहावलोकन कहलाता है । ऐसे छंदों का लोक काव्य में कला पक्ष की दृष्टि से अधिक महत्व है ।

गतागत :-
======= जिस शब्द से चरण प्रारंभ होता है उसके उल्टे शब्द पर पदांत होता है । यथा -

दोहा-" तला नदी अरु बावरी, माँय न रखिये लाज ।
तहाँ होय जल कुआ का, नई लगाये हाँत ।।"

टेक- जाता नई देर का करता जल्दी ल्या जल ताजा ।;[3]

× × × × ×

इसी प्रकार शोधकर्ता ने भी इस प्रकार की विभिन्न रचनायें बनाई हैं । एक स्वरचित रचना का उदाहरण प्रस्तुत है -

सुदामा चरित्र का प्रसंग -
==================

दोहा-" नमा शील नारी कहै, वचन पिया सौ मान ।
न का द्वारका दूर है, वहाँ किशन भगवान ।
टेक- नातें करती सैना, नारी नावे वचन कैना ।"

---

1. अप्रकाशित कवि श्री राम सहाय कारीगर [नई टकसार]
2. शैल मनमोहन भाग 2 राम सहाय कारीगर पृष्ठ 7

प्रस्तुत उदाहरण गतागत के साथ "न" वर्ण से "दो अंग" "चौं अंग" भी है यानि तात्पर्य है कि पद के आदि अंत में वर्ण "न" है ।

उलट गतागत :-
===========

सीधे पढ़ने पर जैसा उच्चारण निकलता है उसी प्रकार का उच्चारण पद को उल्टा पढ़ने पर भी निकलता है । यह रचना बड़ी बेजोड़ परिश्रम साध्य तथा विचित्र होती है । यथा -

" के आसिखि सिखि आके - जा जा -
केना मना मना कै ।"[1]

उपरोक्त छंद उल्टा सीधा पढ़ने पर एक सा उच्चरित होता है । ऐसी रचनायें ही लोक काव्य के कलात्मक सौंदर्य की आत्मा है । इनका लोक काव्य में शीर्षस्थ स्थान है । इसी प्रकार एक पद में यदि एक वर्ण आदि व अंत में 2 बार आये तो "दो अंग" चार बार आये तो चौ अंग तथा आठ बार आये तो अठंग रचना मानी गयी है ।

अठंग का उदाहरण :-

" करकें करत जनक की टीका, कनक चार हरदीका ।"[2]

पद में "क" वर्ण का प्रयोग आठ बार है । साहित्य में अनुप्रास अलंकार है ।

शोधकर्ता की स्वरचित रचना देखिये :-

दोहा-" करे टूक हर धनुष के करके परिकाहरेक ।
कटे कटे से कंठ को, को हारे कर टेक ।।
टेक- कीनें करी कुटिलता आके कीं कुठार धर दोकें ।
छंद- करी जनक चूक
करी कीनें चूक
कर धन के टूक

----

1 व 2 - श्री राम सहाय कारीगर ग्रंथ " नई टकसार "

शब्द	अर्थ
गुंज	खेल में गोटों का नाम
झमका	आशुष्का पूर्वक
लुचई	पूड़ी, सुहारी
वनसटी	वन की सटियाँ
सुदरी	सीधा
गुम्म	कुछ पता न चले
हियाव	शक्ति
छौत	भटी औरत
तिरवाचा	पक्की 3 बार
ज्ञानी	विद्वान

जनपद के बुन्देली के जातीय रिश्तों के नाम :-

बड़े भैया - ठाकुरों में बड़े भाई से बद्दा" और अन्य जातियों में बड़े भाई बड़े भइया ।

दाऊ- अधिकतर ठाकुर दाऊ कहकर पुकारे जाते है । जनपद में "दाऊ" पिता या बड़े भइया को भी कहते हैं ।

दादा- बहू जेठ से दादा कहती है । कई घरानों में बड़े भाई से छोटे भाई दादा कहते है । किसी घर में पिता या बाबा से भी दादा कहते है ।

बड़ेभाई- मुसलमानों में बड़े भाई बहनोई से कहा जाता है जब कि अन्य जातों में अग्रज [बड़े भाई] होते हैं ।

भइआ जू- वैश्य कौम में बहनोई से भइआजू कहा जाता है ।

जीजा जू- मुसलमानों को छोड़कर अन्य जातियों में बहनोई को जीजा, या जीजा जी या जीजा जू कहा जाता है ।

बड़े- साले को बड़े कहकर पुकारते है । बहनोई से उम्र में बड़ा होता है।

कोरी जाति में बहिन के ससुर को बड़े कहते हैं ।

पापा- वैसे ईसाई अंग्रेज जाति में पिता को पापा कहते है परन्तु अब जनपद में प्रत्येक जात में पापा का बुन्देलीकरण होकर पिता का बोधक बन गया है ।

मम्मी- माता का प्रतीक है । इसे देहातों में घर में प्रचलित किया जा रहा है ।

बाई- अम्मा को कहा जाता है ।

भौजी - अग्रज की पत्नी भौजी या भुज्जी कही जाती है ।

बहू- ससुर अपने पुत्र की पत्नी को छोटे भाइयों की पत्नी को सब बहू या बऊ कहते हैं ।

कक्काजू- ठाकुरों में पिता को कक्का जू कहते है ।

नन्ना जू- ठाकुरों में माता को नन्ना जू कहते है ।

काकी- पिता के भाई की स्त्री काकी या चाची होती है ।

फुआजू- ठाकुरों में फुआजू [बाप की बहिन] को कहते है ।

फूफाजू- बाप के बहनोई को फूफाजू या फूफा जू कहते है । इनमें जू लगता है । लड़कियों के नाम में जूराजा लगता है यथा भगवान जू राजा ।

दाऊ जू/दाऊसाब- ठाकुरों के आदर सूचक शब्द है ।

राजाराम- ठाकुरों का अभिवादन है ।

कुँवर साब- ठाकुरों को कुँवर साब कहकर संबोधित किया जाता है ।

नन्नों - पुत्र को नन्नों कहा जाता है जिसकी आयु छोटी हो ।

रानीसाब- ठाकुरों की पत्नी रानी और ठाकुर राजा कहे जाते है । यह मान्यवाची शब्दराजाओं से चले आ रहे है ।

सारज- साले की पत्नी को सारज कहते है ।

सारी- पत्नी की बहिन सारी कही जाती है ।

भानेज- बहिन का पुत्र तथा भानेजन बहिन की पुत्री ।

भतीजो- भाई का पुत्र अथवा सारे का पुत्र

छौरा/छौरिया- छोटे बालक को छौरा तथा बालिका को छौरिया कहते हैं ।

दाऊ - साधारण रूप से अपने से बड़े को दाऊ कहते है । जनपद में ठाकुर यादव आदि दाऊ कहलाते है । घर परिवार में जेठ भ्राता को भी दाऊ कहने लगे है । पिता, चाचा आदि भी दाऊ कहे जाते हैं ।

बिन्नु:- पुत्री को बिन्नू कहते है । गांव के बड़े बूढ़े गांव की किसी भी लड़की को बिन्नू कहते हैं ।

बैन- देवरानी जिठानी आपस में एक दूसरे को बैन कहती है । देवरानी जिज्जी भी कहती है । दो बहने या सामान्य नारियाँ एक दूसरे को बैन कहती है ।

दादा- बहू अपने पति के बड़े भाई को दादा कहकर सम्बोधित करती है । परिवार के बड़े बूढ़े पिता, चाचा भी दादा कहलाते हैं ।

नंदेऊ - ननद का पति ननदेऊ कहलाता है ।

डुकरिया- बूढ़ी स्त्री को डुकरिया कहते हैं । माँ को भी कहीं कहीं डुकरिया की संज्ञा दी जाती है ।

दुलिया - सम्मान वाचक शब्द है । नई नई बहू को भी दुलिया कहते हैं । पुरानी आयु की स्त्रियाँ अपनी छोटी आयु की बहुओं को तथा पुत्र वधुओं को तथा सम वयस्क स्त्रियों को दुलिया या दुलिया बू कहकर पुकारती हैं ।

देवरानी - अपने देवर की पत्नी को देवरानी कहलाती है ।

जिठानी- अपने पति के अग्रज की पत्नी जिठानी कहलाती है ।

पाँवनें - मेहमानों को अतिथि सम्बन्धी या पावनें कहा जाता है ।

अजा- पिता का पिता अजा कहलाता है ।

परआजा- पिता के पिता का पिता पर अजा तथा माँ परआजी कहलाती है।

-=-

कका/चाचा- पिता का भाई कका या कक्का कहा जाता है ।

चचा- मुसलमानों में बड़े बूढ़े को चचा कहते है ।

अब्बा- मुसलमानों में पिता को अब्बा कहते है ।

खाला- मुसलमानों में माँ की बहिन खाला होती है ।

मौसी - हिन्दुओं में माँ की बहिन को मौसी कहते है ।

मौसा - वैश्यों, कायस्थों में माँ की बहिन का पति मौसा अन्य अधिकांश कौमों में मौसिया कहा जाता है ।

साढू- साली का पति साढू कहलाता है ।

मामा/मम्मा- माँ का भाई मम्मा है ।

नाना- माँ का पिता नाना या बब्बा कहलाता है या बब्बा ।

बब्बा- पिता के पिता को बब्बा कहते है ।

बऊ- पिता की माँ को बऊ कहते है ।

नाती - पुत्र का पुत्र/ पौत्र भी कहा जाता है ।

नातिन- पुत्र की पुत्री । पौत्री भी कही जाती है ।

पंती- पुत्र के पुत्र का पुत्र पंती कहलाता है ।

पंतिन - पुत्र के पुत्र की पुत्री पंतिन कहलाती है ।

लला- 1. छोटे बालक को लला कहते हैं ।

2. भौजी अपने देवर को लला कहती है ।

3. ससुर अपने दामाद को लला कहता है ।

4. सामान्य रूप से कोई स्त्री किसी युवक को जो उससे आयु में छोटा हो, को लला कहती है ।

लल्ला- यह सम्मान सूचक नाम या पद है । ज्येष्ठ भ्राता, चाचा, पिता आदि का परिवार में कहलाने लगता है ।

के विद्वान् वर्ग द्वारा पर्याप्त अनुभव व निचोड़ के बाद हुआ है परन्तु देश काल परिस्थितियों के अनुसार यह सदैव सत्य ही रहेंगी । इस बात की गारंटीनहीं दी जा सकती है । अनेक जातीय कहावतें अब सत्य हीन हो गई हैं । सम्प्रति रूप में कुछ उदाहरण प्रस्तुत है -

1. कायस्त की बच्चा,
   कभी न सच्चा ।
   सच्चा है तो -
   गधे का बच्चा ।"

निर्मूलता :- उक्त परम्परागत कहावत समाज की महत् विद्वान कुलीन जाति
--------- कायस्थ पर तीखा प्रहार है और उनकी ईमानदारी पर चोट है । सौभाग्य से ग्राम में स्वयं देवतुल्य कायस्थ घराना रहा है जिसे समाज साधुसी पुरुष देवता कहा करता था । बाबू वृन्दावन, बाबू मुकुन्दलाल व दीन दयाल श्रीवास्तव ऐसी ही विभूतियाँ थीं । समाज में सैकड़ों सच्चरित्र कायस्थ है तथा प्रत्येक जाति में है । इसी प्रकार -

2. " बामन कुत्ता नाऊ
   जात देख गुर्राऊ ।"

इस लोकोक्ति में ब्राह्मण तथा नाऊ के कुत्ते के समान अधिक तथा अधम कोटि की श्रेणी में रख दिया गया है जो कि घोर असत्य एवं मिथ्यात है ।

इस प्रकार की अन्य जातीय कहावतों के कुछ उदाहरण देखिये जिन्हें केवल व्यंग्य प्रसंगों में जनपद में प्रयोग किया जाता है परन्तु वास्तविकता की कसौटी पर ये कहावतें अब मिथ्या ही समझी जाना चाहिये ।

3. अहीर जाति के प्रति-
   " अहि अहीर इक रात है, अहि ते कठिन अहीर ।
   अहि तो बाधा में बंधे, बाधा काटे अहीर ।"
4. "बाट बहुरिया कुम्हार,
   तीनऊ देखें उधार ।"

---

5. " घाट मरी जब जानिये, जब तेरई हो जाय ।"

6. " मरी होय घानियां, डरी होय छाँव में,
हजार काम छोड़ कें डार देव घाम में ।।"

आदि इस प्रकार की परम्परागत सैकड़ों निर्मूल उक्तियाँ जनपद की भाषा में व्यवहृत होती हैं ।

जनपद में संक्षिप्ततम बुन्देली रामायन :-
==============================

जनपद के ग्रामीण अंचल में अनपढ़ व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर प्रसंगवश छै चौपाईयों में पूरी रामायन कह देता है । जिसे सुनकर हास्य अवश्य आता है । परन्तु यह परम्परागत रामायन सब से तथा कहीं से भी पूर्णतः आती है । यथा -

" एक राम हते एक रावन्ना ।
एक ठाकुर उर इक बामन्ना ।।
उन्ने उनकी नार हरी ।
तो उन्ने उनकी नास करी ।।
बात को बड़ गओ बातन्ना ।
तुलसी ने धर दओ पोथन्ना ।।"

इस संक्षिप्ततम रामायण का भाव यह है कि अशिक्षित जन मानस ने सम्पूर्ण रामचरित में से तत्व की बात अपनी बोली बानी भाषा में किस प्रकार गूँथ कर प्रकट की है । यह बात अधिक महत्व की है ।

बुन्देली की मौन तथा सांकेतिक भाषा का सूत्र :-
======================================= 707

मानस प्रसंग में जब सूपनखा वन में श्री राम के पास विवाह का प्रस्ताव रखने लगी तो मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने लक्ष्मण अनुज की ओर संकेत किया । उन्होंने फिर श्री राम के पास भेजा । इस समय की श्री राम और लक्ष्मण जी की सांकेतिक लिपि में सम्पूर्ण बातचीत होती है । परम्परागत रूप से प्राप्त स्पष्ट सूत्र केवल एक चौपाई में यह लिपि निम्नांकित है :-
=-=

" अछिमन कमल चक्र टंकारा ।
ताल पवन यौवन शशिकारा ।
अँगुरिन अक्षर चुटकिन मात्रा ।
राम कही लक्ष्मन सों वार्ता ।।"

चौपाई की व्याख्या :-

अछिमन शब्द अ से अः तक के वर्णों का प्रतीक है तथा सांप के फन जैसा हाथ कर दिया तो लक्ष्मण जी समझेंगे कि अ वर्ग अक्षर लगाना है । सांप की तरह हाथ उठाकर फिर जिस अक्षर को कहना है उतनी उँगलियों के संकेत बताये और यदि मात्रा है तो चुटकी से तथा बड़ी है तो संकेत से तथा उल्टी सीधी चुटकी से छोटी व बड़ी मात्रायें सांकेतिक लिपि में है । वर्णों के अक्षर व मात्राओं की सांकेतिक लिपि एक सी है परन्तु वर्गों के अक्षरों के संकेत पृथक पृथक है । जैसे सांप जैसे हाथ की आकृति से अ वर्ग "अ" से अः तक । कमल जैसी आकृति से क वर्ग, हवा में चक्र बनाने से च वर्ग, टंकार लगाने से ट वर्ग, ताल बजाने से त वर्ग, पवन का संकेत करने पर प वर्ग यौवन अर्थात जवानी का संकेत करने से य वर्ग, तथा शशि अर्थात चंद्रमा की ओर संकेत करने से श स ष ह आदि को जान लिया जाता है । श्री राम ने इसी सांकेतिक लिपि में लक्ष्मण से अपनी सारी बात चीत की और सूपनखा के नाक कान काटे जाने तक का प्रसंग सफलता पूर्वक बिना कहे सम्पन्न हुआ । अतः निःसन्देह रूप से जनपद की यह मूक भाषा शैली एक विलक्षण तथा अत्यंत महत्व की वस्तु है । इसे कार्य रूप में प्रयोग करने की आवश्यकता से इसके लाभ दिखाई दे सकते है । गोपनीय बातों को बिना कुछ कहे सब कुछ कहना इस मूक भाषा शैली लिपि सूत्र की विशेषता है ।

जनपद की नाप तौल की भाषा :-

कोस - दूरी के लिए कोसों की दूरी अब भी कही जाती है ।

फलांग- आँखी की फलाँग की दूरी का अन्दाज है ।

गज- सामान्यतः दो हाथ लम्बाई की एक गज की मान्यता है ।

कोस- दो मील की दूरी को एक कोस कहा जाता है ।

पगहा- लगभग 20 हाथ लम्बाई की पतली रस्सी ।

बरान- लगभग 40 हाथ की लम्बी मोटी रस्सी ।

बैमा- दोनों भुजायें पूरी पसारने पर इस मध्यमा से उस मध्यमा तक की दूरी बैमा है ।

बेधी - कनिष्ठका से अंगुष्ठ पसारने के फासले को बेधी कहते हैं ।

हाथ - कुहनी से मध्यमा तक का फैलाव प्रत्येक व्यक्ति के हाथ की लम्बाई कहाता है ।

अंगुल- सामान्यतः एक अंगुली की मोटाई को कहते है ।

चाँवर भर- चावल जितने वजन की तौल है ।

घुँघची या रत्ती भर- एक गुंजा की तौल है ।

तोला- एक कलदार भर जिसमें 16 आने माने जाते थे उसकी तौल है।

सेर- एक किलो से कम होता है ।

छटाँक- सेर का सोलहवाँ भाग है । आजकल ग्रामों का प्रचार गाँव गाँव में है परन्तु अभी जनता पूर्ण दक्ष नहीं हो पाई है ।

मन- 40 सेर का माना जाता था । इसका प्रचलन कम होता जा रहा है ।

लीटर- तरल पदार्थ नापने की तौल है जो एक कि0ग्रा0 । लीटर की मानी जाती है ।

मीटर- 3 फीट का मीटर माना जाता है ।

बीघा- 40 बिसविस का क्षेत्र एक बीघा है ।

एकड़- 2½ बीघा जमीन एक एकड़ के बराबर होती है । कहीं कहीं 3 बीघा का एकड़ माना जाता है ।

पैला- गेहूँ चना कुछ फसलों का नापने का पात्र है जिसमें लगभग 10 किलो ग्राम खाद्यान्न आदि आता है ।

पौरी- काष्ठ का पात्र होता है जिसमें एक पाव या डेढ़ पाव के लगभग तक अनाज आदि नाप कर दिया जाता है । बच्चे पैदा होते समय पौरी से औली बाँटने की परम्परा आज भी चल रही है ।

पसीभर- अपनी एक हाथ की हथेली में जितना बन सके उतनी वस्तु पसी भर कही जाती है ।

चौंकाभर- दोनों हाथों के चौड़ने पर उसमें जितना पदार्थ बने वह चौंका भर होता है ।

घूंट भर- मुँह में जितना तरल पदार्थ भरा जा सके वह घूंट है ।

नोट- छिदाम, पाई, दमड़ी, धेला, टका, पैसा आदि पुरानी नाप तोलों की बोलियां ग्रामीण क्षेत्रों में तथा पुराने व्यक्तियों की बोली में आज भी प्रचलित हैं ।

ठेकी भर- एक बैलगाड़ी में टाट पट्टी लगाकर भरा जाने वाला पदार्थ ठेकी भर की नाप कहाता है ।

गाड़ी भर- बैलगाड़ी को भर लेने पर जितना पदार्थ हो वह एक गाड़ी कहा जाता है ।

बोझभर या गट्ठा भर:- एक स्त्री या पुरुष जितना बोझ उठाकर सिर पर ला सके वह बोझ भर है ।

अंग्वार- दोनों हाथों की लपेट में जितना पदार्थ बने उसे अंग्वार भर कहते हैं ।

ढ कल्या- 2,3 मुट्ठी काटी हुई फसल का एकत्रित ढेर है ।

डलिया भर- आधी पुरी की मात्रा की फसल डलिया भर कही जाती है।

छाँट भर- एक आदमी की एक हाथ की पकड़ में जितनी पेड़ पत्तों के आ जाय वह एक छाँट मात्रा है ।

डोका- तीन पुरी की मात्रा एक डोका है । जिसमें लगभग 7 से 10 कि0ग्रा0 खाद्यान्न निकलता है ।

पुरी- 2 से 3 कि0ग्रा0 तक खाद्यान्न/ गेहूँ के गट्ठे को एक पुरी कहते हैं ।